पाठ 15

छोटा जादूगर

आइए सीखें - ■माता-पिता की सेवा और समर्पण की भावना का विकास। ■विशेषण एवं प्रकार। ■पंचमाक्षर तथा अनुस्वार का प्रयोग।

कार्निवाल के मैदान में बिजली जगमगा रही थी। मैं खड़ा था फव्वारे के पास, जहाँ एक लड़का चुपचाप शरबत पीने वालों को देख रहा था। उसके गले में फटे कुरते के ऊपर से एक मोटी-सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में कुछ ताश के पत्ते थे। उसके मुख पर गम्भीर विषाद के साथ धैर्य की रेखाएँ थीं। मैं उसकी ओर न जाने क्यों आकर्षित हुआ।

मैंने पूछा, ''क्यों जी, तुमने इसमें क्या देखा?''

''मैंने सब देखा है। यहाँ चूड़ी फेंकते हैं। खिलौने पर निशाना लगाते हैं। मुझे तो खिलौने पर निशाना लगाना अच्छा मालूम हुआ। जादूगर तो बिल्कुल निकम्मा है। उससे अच्छा तो ताश का खेल मैं दिखा सकता हूँ।'' उसने बड़ी प्रगल्भता से कहा।

मैंने पूछा, ''और उस परदे में क्या है? वहाँ तुम नहीं गए थे?''

''नहीं, वहाँ मैं नहीं जा सकता। टिकट लगता है।''

मैंने कहा, ''तो चलो, मैं वहाँ तुमको लिवा चलूँ।'' उसने कहा, ''वहाँ जाकर क्या कीजिएगा? चलिए निशाना लगाया जाए।''

शिक्षण संकेत - ■कहानी को उचित हाव-भाव के साथ पढ़िए और पढ़वाइए।

मैंने उससे सहमत होकर कहा, ‘‘तो फिर चलो, पहले शरबत पी लिया जाए।’’

हम दोनों शरबत पीकर निशाना लगाने चले।

राह में ही उससे पूछा, ‘‘तुम्हारे और कौन-कौन हैं?’’

‘‘माँ और बाबूजी।’’

‘‘उन्होंने तुमको यहाँ आने के लिए मना नहीं किया?’’

‘‘बाबूजी जेल में हैं।’’

‘‘क्यों?’’

‘‘देश के लिए।’’ वह गर्व से बोला।

‘‘और तुम्हारी माँ?’’

‘‘वह बीमार है।’’

‘‘और तुम तमाशा देख रहे हो?’’

उसके मुँह पर तिरस्कार की हँसी फूट पड़ी। उसने कहा, ‘‘तमाशा देखने नहीं, दिखाने आया हूँ। कुछ पैसे ले जाऊँगा, तो माँ को पथ्य दूँगा। मुझे शरबत न पिलाकर आपने मेरा खेल देखकर मुझे कुछ दे दिया होता, तो मुझे अधिक प्रसन्नता होती।’’

मैं आश्चर्य से उस तेरह-चौदह वर्ष के बालक को देखने लगा।

‘‘हाँ, मैं सच कहता हूँ, बाबूजी! माँ बीमार है, इसलिए मैं नहीं गया।’’

‘‘कहाँ’’

‘‘जेल में। जब कुछ लोग खेल-तमाशा देखते ही हैं, तो मैं क्यों न दिखाकर माँ की दवा करूँ और अपना पेट भरूँ?’’

मैंने उससे कहा, ‘‘अच्छा चलो निशाना लगाया जाए।’’ हम दोनों उस जगह पर पहुँचे, जहाँ खिलौनों को गेंद से गिराया जाता था। मैंने बारह टिकट खरीदकर उस लड़के को दिए।

वह निकला पक्का निशानेबाज, उसकी कोई गेंद खाली नहीं गई।

देखने वाले दंग रह गए। उसने बारह खिलौनों को बटोर लिया, लेकिन उठाता कैसे? कुछ मेरे रूमाल में बाँधे, कुछ जेब में रख लिए।

कलकत्ता के सुरम्य बॉटेनिकल उद्यान में लाल कमलिनी से भरी हुई एक छोटी झील के किनारे घने वृक्षों की छाया में अपनी मण्डली के साथ बैठा हुआ मैं जलपान कर रहा था। इतने में वही छोटा जादूगर दिखाई पड़ा। मस्तानी चाल से झूमता हुआ आकर कहने लगा-

‘‘बाबूजी नमस्ते। आज कहिए, तो खेल दिखाऊँ।’’

नहीं जी, ‘‘अभी हम लोग जलपान कर रहे हैं।’’

''फिर इसके बाद क्या गाना-बजाना होगा बाबूजी?''

''नहीं जी-तुमको-'' मैं क्रोध में कुछ और कहने जा रहा था। श्रीमती जी ने कहा, ''दिखलाओ जी, तुम तो अच्छे आए। भला कुछ मन तो बहले।'' मैं चुप हो गया, क्योंकि श्रीमती की वाणी में माँ की सी वह मिठास थी, जिसके सामने किसी भी लड़के को रोका नहीं जा सकता। उसने खेल आरम्भ किया।

उस दिन कार्निवाल के सब खिलौने उसके खेल में अपना अभिनय करने लगे। बिल्ली रूठने लगी। भालू मनाने लगा। बंदर घुड़कने लगा। गुड़िया का ब्याह हुआ। गुड्डा वर काना निकला। लड़के की वाचालता से ही अभिनय हो रहा था। सब हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए।

ताश के पत्ते लाल हो गए। फिर सब काले हो गए। गले की सूत की डोरी टुकड़े-टुकड़े होकर फिर जुड़ गई। लट्टू अपने आप नाच रहे थे। मैंने कहा, ''अब हो चुका। अपना खेल बटोर लो, हम लोग भी अब जाएँगे।''

श्रीमती जी ने धीरे से एक रुपया दे दिया। वह उछल पड़ा। मैंने कहा, ''लड़के।''

''छोटा जादूगर कहिए, यह मेरा नाम है। इसी से मेरी जीविका है।''

मैं कुछ बोलना ही चाहता था कि श्रीमती जी ने कहा, ''अच्छा तुम इस रुपये से क्या करोगे?''

''पहले भरपेट पकौड़ी खाऊँगा। फिर एक सूती चादर लूँगा।''

मेरा क्रोध अब लौट आया। मैं अपने आप पर बहुत क्रोधित होकर सोचने लगा, ओह! कितना स्वार्थी हूँ मैं। उसके एक रुपया पाने पर मैं ईर्ष्या करने लगा था न।

वह नमस्कार करके चला गया। हम लोग कुंज देखने के लिए चले। रह-रहकर छोटे जादूगर का स्मरण होता था। एक दिन सचमुच वह झोंपड़ी के पास चादर कन्धे पर डाले खड़ा था। मैंने मोटर रोककर उससे पूछा, ''तुम यहाँ कहाँ?''

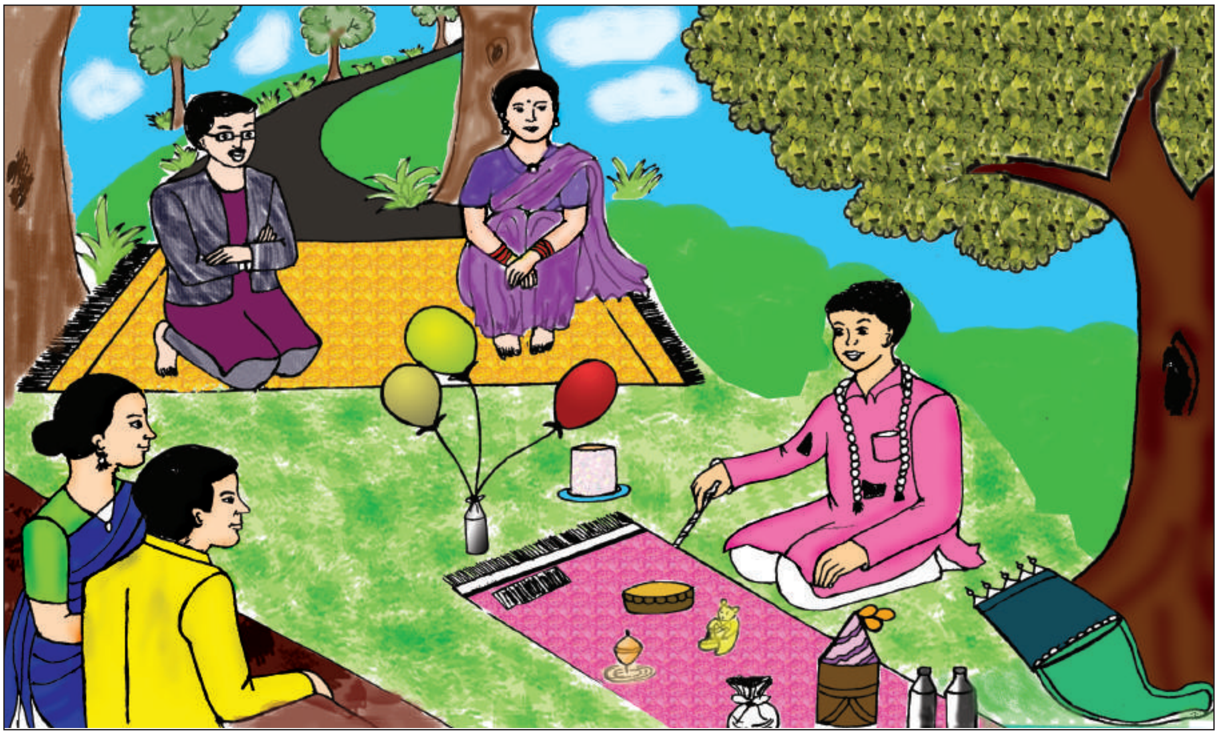

"मेरी माँ यहीं है न। अब उसे अस्पताल वालों ने निकाल दिया।"

मैं उतर गया। उस झोंपड़ी में देखा, तो एक स्त्री-चिथड़ों से लदी हुई काँप रही थी।

छोटे जादूगर ने कम्बल ऊपर डालकर उसके शरीर से लिपटते हुए कहा, "माँ।"

मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े।

एक दिन कलकत्ते के उस उद्यान को फिर देखने की इच्छा से मैं अकेला ही चल पड़ा। दस बज चुके थे। मैंने देखा कि उस निर्मल धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंग-मंच सजा था। मोटर रोककर उतर पड़ा। वहाँ बिल्ली रूठ रही थी। ब्याह की तैयारी थी। पर यह सब होते हुए भी जादूगर की वाणी में प्रसन्नता की तरी नहीं थी - मानों उसके रोयें रो रहे थे। मैं आश्चर्य से देख रहा था। खेल हो जाने पर पैसा बटोरकर उसने भीड़ में से मुझे देखा, वह जैसे क्षणभर के लिए स्फूर्तिमान हो गया। मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा, "आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं?"

"माँ ने कहा था कि आज तुरन्त चले आना। मेरी घड़ी समीप है।" अविचल भाव से उसने कहा।

"तब भी तुम खेल दिखाने चले आए? मैंने क्रोध से कहा। उसने कहा, " क्यों नहीं आता?

और कुछ कहने में जैसे वह अपमान का अनुभव कर रहा था। क्षण भर में मुझे अपनी भूल मालूम हो गई। उसके झोले को गाड़ी में फेंककर उसे भी बिठाते हुए मैंने कहा, "जल्दी करो।" मोटर वाला मेरे बताए हुए पथ पर चल पड़ा।

कुछ ही मिनटों में झोंपड़े के पास पहुँचा। जादूगर दौड़कर "माँ-माँ" पुकारते हुए झोंपड़े में घुसा। मैं भी पीछे था। किन्तु स्त्री के मुँह से बे................निकल कर रह गया। उसके दुर्बल हाथ उठकर रह गए। जादूगर उससे लिपटकर रो रहा था, मैं स्तब्ध था। उस उज्ज्वल धूप में समग्र संसार जैसे जादू-सा मेरे चारों ओर नृत्य करने लगा।

- जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में मील के पत्थर हैं। प्रसाद जी ने 'कामायनी' महाकाव्य की रचना की। उन्होंने अनेक कहानी, ऐतिहासिक नाटक, उपन्यास लिखे हैं। जिनमें चन्द्रगुप्त, ककांल एवं तितली (उपन्यास) इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए -

विषाद	-	धैर्य	-	प्रगल्भता	-	गर्व	-
तमाशा	-	तिरस्कार	-	पथ्य	-	बॉटिनीकल	-
जलपान	-	उद्यान	-	वाचालता	-	जीविका	-
अविचल	-	स्तब्ध	-	उज्ज्वल	-	समग्र	-

अभ्यास

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) छोटे जादूगर से लेखक की पहली मुलाकात कहाँ हुई?

(ख) लेखक ने छोटे जादूगर से पहली बार मिलने पर क्या पूछा?

(ग) छोटे जादूगर का खेल उस दिन क्यों नहीं जमा?

(घ) बालक का नाम छोटा जादूगर क्यों पड़ा?

(ङ) छोटे जादूगर के किन-किन गुणों ने तुम्हें प्रभावित किया?

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

(क) ....के मैदान में बिजली जगमगा रही थी।

(ख) मैं सच कहता हूँ बाबूजी......................बीमार है।

(ग) ....कहिए यह मेरा नाम है।

(घ) माँ ने कहा था कि आज......................चले आना मेरी घड़ी...................है।

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण करते हुए वाक्यों में प्रयोग कर लिखिए।

प्रगल्भता, तथ्य, उद्यान, स्वार्थी, ईर्ष्या, धैर्य

2. निम्नलिखित तालिका के 'क' खण्ड में मुहावरे और 'ख' खण्ड में अर्थ दिए हैं। 'ग' खण्ड में मुहावरों के सामने सही अर्थ लिखिए।

क	ख	ग
उछल पड़ना	शाबाशी देना	....
दंग रह जाना	परेशान होना	....
पीठ थपथपाना	दुःखी होकर रोना	....
आँसू निकल पड़ना	आश्चर्य चकित होना	....
चैन न पड़ना	अधिक प्रसन्न होना	....

3. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए -

“बाबूजी जेल में है।”

“क्यों”?

“देश के लिए” गर्व से बोला

“और तुम्हारी माँ।”?

“वह बीमार है।”

“और तुम तमाशा देख रहे हो।”

उपर्युक्त वाक्य संवाद हैं। इन वाक्यों को हाव-भाव तथा उतार चढ़ाव के साथ पढ़ा जाए तो भाव में परिवर्तन आ जाता है।

पाठ में आए ऐसे उतार-चढ़ाव (अनुतान) वाले 5 वाक्य लिखिए और उन्हें बोलकर प्रभाव पैदा करने का प्रयास कीजिए, अर्थ पर भी ध्यान दीजिए।

4. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए -

(क) छोटा जादूगर फटा कुरता पहने था।

(ख) उसने बारह खिलौनों को बटोर लिया।

पहले वाक्य में छोटा जादूगर में ‘छोटा’, फटा कुरता में फटा, बारह खिलौनें में बारह शब्द क्रमशः जादूगर की, कुरता की और खिलौनों की विशेषताएँ स्पष्ट कर रहे हैं।

5. ध्यान दीजिए -

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषताएँ बताते हैं, उन्हें विशेषण तथा जिस शब्द की विशेषताएँ बताई जाती हैं उन्हें विशेष्य कहते हैं।

जैसे-छोटी झील, गुलाबी शहर, निकम्मा जादूगर। इसमें छोटी, गुलाबी, निकम्मा, शब्द विशेषण हैं और झील, शहर तथा जादूगर विशेष्य हैं।

विशेषण के भेद

(क) गुणवाचक विशेषण - जिस शब्द में संज्ञा या सर्वनाम के गुण स्वभाव, काल, आकार रंग आदि का ज्ञान हो उसे गुण वाचक विशेषण कहते हैं। जैसे - छोटा जादूगर, छोटी झील, निकम्मा आदमी।

(ख) संख्या वाचक विशेषण - जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध हो उसे संख्या वाचक विशेषण कहते हैं। जैसे - एक चादर, चार रुपए।

(ग) परिमाण वाचक विशेषण - जिन विशेषणों के द्वारा किसी वस्तु की नाप या तौल का

बोध हो तो वे परिमाण वाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे - थोड़ा दूध, सारा संसार।

(घ) सार्वनामिक विशेषण - पुरुष वाचक और निजवाचक सर्वनाम को छोड़कर (मैं, तू, तुम, वह) अन्य सर्वनाम किसी संज्ञा के पहले आते हैं, तब वे सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं। जैसे-मेरा देश, यह घोड़ा।

पाठ में से विशेषण विशेष्य छाँटकर तालिका बनाइए।

6. निम्नलिखित शब्दों को ध्यानपूर्वक पढ़िए। ये शब्द दोनों रूपों में लिखे जा सकते हैं-

पंचम वर्ण का प्रयोग (अपने वर्ग - क, च, ट, त, प के साथ)	पंचम वर्ण के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग
कङ्घा	कंघा
पञ्च	पंच
ठण्डा	ठंडा
मन्दिर	मंदिर
कम्बल	कंबल

नीचे लिखे शब्दों में अनुस्वार के स्थान पर पंचमवर्ण का प्रयोग कीजिए -

क - वर्ग -	कंगन, अंक, शंख, गंगा
च - वर्ग -	पंच, गुंजन, खंजन, रंजन
ट - वर्ग -	पंडा, पंडित, घंटा, ठंडा
त - वर्ग -	पंत, चंदन, धंधा, कंधा
प - वर्ग -	पंप, कंप, मंदिर, दंभ

योग्यता विस्तार

(1) छोटा जादूगर जैसा व्यक्ति यदि आपके जीवन में आए तो आप क्या करेंगे। इस कल्पना को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

(2) गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाण वाचक एवं सार्वजनिक विशेषणों से युक्त पाँच-पाँच शब्द अपनी पुस्तिका में लिखिए।

(3) अनुस्वार वाले शब्द छाँटकर उच्चारण कीजिए उसके स्थान पर पंचमाधार का प्रयोग करके लिखिए।

अपना कर्तव्य पालन करने में ही जीवन की मिठास है।